









# अस्थमा अटैक के पहले के लक्षणों को जानें

गले और ठोंडी में खुजली

अस्थमा की समस्या शुरू होने से पहले गले और ठोंडी में खुजली की समस्या हो सकती है। यह समस्या क्यों होती है? इसके बारे में कोई जानकारी नहीं है। लेकिन ज्यादातर लोग इस लक्षण को नजरअंदाज कर देते हैं जो कि ठीक नहीं है।

## मूड में बदलाव

अचानक से रोगी के मूड में बदलाव देखने को मिलता है। बोलते-बोलते चुप हो जाना, ताना और चिंताप्रस्त हो जाना भी अस्थमा अटैक का संकेत हो सकता है। अगर आपको या आपके असपास किसी अस्थमा रोगी में यह लक्षण दिखें तो इसे नजरअंदाज ना करें।

## कफ

अस्थमा का मुख्य लक्षण है कफ की समस्या। जब यह समस्या पूरी रूप से आपको सताने लगे तो इसके पीछे कुछ खास वजह हो सकती है। हो सकता है कि यह साइनस या अन्य किसी वजह से हो लेकिन जब किसी अस्थमा रोगी को यह समस्या होती है तो इसे हक्के में ना लें।

## सांस लेने में समस्या

अस्थमा रोगी को सांस लेने में समस्या होना सामान्य माना जाता है लेकिन जब सांस लेते वक्त घरघराहट की आवाज आने लगे तो इसे सामान्य ना समझें। यह गंभीर समस्या का संकेत हो सकता है।

## समय रहते दें ध्यान

लेकिन एक माह बाद ही उन्हें सीढ़ियां उत्तरते हुए सीधे पैर के घुटने में सामने के हिस्से में कुछ परेशानी महसूस होने लगी, पर उन्होंने ज्यादा ध्यान नहीं दिया। करीब एक सप्ताह गुजरने के बाद यह परेशानी हल्के दर्द में बदल गई। धीरे-धीरे सीढ़ियां चढ़ते हुए भी पैरों में दर्द होने लगा।

डॉक्टर ने इसे घुटने के सामने वाले हिस्से का दर्द बताया, जिसे चिकित्सकीय भाषा में

पेटेलोफाइरल ऐन सिंड्रोम एंटीरियर नी पेन या किर्कोन्डोमेलिसिस पेटेला कहते हैं। डॉक्टर ने उन्हें कुछ दर्द निवारक दवाएं लेने को कहा है।

साथ ही सीढ़ियां चढ़ने-उत्तरने से बचने की सलाह दी है। दर्द दोबारा न हो, इसलिए मांसपेशियों को मजबूत बनाने के लिए फिजियोथेरेपिस्ट के पास जाने की सलाह भी दी दी है।

## दर्द का कारण

जांघ की हड्डी को फीमर, जोड़ की मुख्य बड़ी हड्डी को टिकिया और नी कैप को पटेला कहते हैं। जांघ की हड्डी और नी कैप से मिल कर जोड़ बनता है, उस पेटेलोफाइरल जॉडिंग कहते हैं। लगभग 20 फीटसदी परीज पेटेलोफाइरल पेन सिंड्रोम (पीफीएस) के प्रभावित होते हैं। पुरुषों की तुलना में महिलाओं में यह समस्या अधिक होती है। यह दर्द नी कैप और जांघ की हड्डी के बीच अधिक घर्षण होने के कारण होता है। इस वजह से पंज की पिछाँ का पिछला हिस्सा, टखना, कूल्हे का ऊपरी हिस्सा, पैदू और पैरों के मध्य में दर्द बढ़ जाता है। नी कैप के जांघ की हड्डी से टकने के कई कारण होते हैं। पीफीएस के अधिक होने का मुख्य कारण पैर की मांसपेशियों का प्रभावित होना है। ये मांसपेशियां एक तरह से हमारे शरीर का इंजन रूम होती हैं, जिनकी सक्रियता के कारण ही हमारी सक्रियता बनी रहती है। चलने से लेकर दौड़ने जैसी हर गतिविधि इन्हीं मांसपेशियों के कारण होती है। जब ये मांसपेशियां ढांग से काम नहीं करतीं तो खुटनों पर दबाव पड़ने लगता है। जांघ के बाहरी और सामने वाले हिस्से की मांसपेशियों पर काफी वजन पड़ता है, जिससे कई बार ये मांसपेशियां चोटिल हो जाती हैं व उनमें खिंचाव आ जाता है। मांसपेशियों में अकड़न बढ़ने से दर्द बढ़ने लगता है और मांसपेशियों की कार्यव्युत्थालता कम होने लगती है। खुटनों के जोड़ में दर्द भी होता है। अमातौर पर जांघ के भीतरी हिस्से की मांसपेशियों की तुलना में बाहरी मांसपेशियां अधिक कही जाती हैं। इस अस्तुलन के कारण नी कैप बाहर की ओर उठने लगती हैं और चलते समय जांघ वाली हड्डी से टकराती है। इसी वजह से नी कैप और जांघ की हड्डी के बीच सूजन और दर्द बढ़ जाता है।

## उपचार का तरीका

फिजियोथेरेपिस्ट दर्द में आराम देने के लिए एक्यूप्रैशर या कॉर्स फिक्शन मसाज तकनीक का इस्तेमाल करते हैं, जिसमें दर्द वाले हिस्से पर थोड़ा जोर देकर प्रेशर दिया जाता है। इसके अलावा मालिश से भी काफी आराम मिलता है। नियमित मालिश से मांसपेशियों की अकड़न वाले हिस्से में लचीलापन आ जाता है। कुछ आराम आने पर मांसपेशियों में मजबूती लाने के लिए स्ट्रेंचिंग कराई जाती है। अपने डॉक्टर और फिजियोथेरेपिस्ट से आप घर में किए जाने वाले व्यायाम से राहत पा सकते हैं। अमातौर पर आराम आने में 12 से 16 सप्ताह का समय लग जाता है। घर के फिजियोथेरेपिस्ट द्वारा अपनाई गयी विभिन्न तकनीक और मसाज के लचीलापन को बढ़ा देते हैं। स्थायी निजात पाने के लिए नियमित व्यायाम करना ही सबसे बेहतर उपाय है। ऐसा करने पर खुटने के आसपास की सभी मांसपेशियां मजबूत हो जाती हैं।

अस्थमा अटैक होने से पहले रोगी को सांस लेने में समस्या महसूस होने लगती है क्योंकि सांस लेने वालों जगते के आसपास की मांसपेशियां कठोर हो जाती हैं और एयरवे लाइनिंग में सूजन आ जाती है। अत्यधिक म्यूक्स बनने के कारण सांस लटी ब्लॉक हो जाती है।

## पॉश्शर

### बदलना

ठीक तरह से सांस लेने के प्रयास में रोगी आगे की तरफ चुकने लगता है जिससे वो कूबड़ियां आकर में आ जाता है। लेकिन सांस लेने में कठिनाई होने पर

इस स्थिति में आना समस्या को और बढ़ा सकता है।

### सीने में जलन

जब अस्थमा की समस्या बढ़ने वाली होती है तो रोगी को सीने में जलन या कुछ अन्य तरह की समस्या भी हो सकती है। अस्थमा ग्रस्त बच्चों में जब यह समस्या होती तो वो समझ नहीं पाते कि उन्हें क्या हो रहा है। ऐसे में उनके माता-पिता को ज्यादा सरकत रहना चाहिए।

### होठों और अंगुलियों में नीलापन

जब शरीर के प्रयास मात्रा में ऑक्सीजन नहीं मिल पाता है तो होठों और अंगुलियों और होठों पर नीलापन दिखायी देने लगता है। इस स्थिति को केयानोपिसिस कहते हैं। यह स्थिति इशारा करती है कि रोगी को तुरंत चिकित्सक के पास ले जाया जाए।

## अस्थमा अटैक

### से बचने के लिए

#### जरूरी है कि

रोगी को उसके पहले दिखायी और महसूस होने वाले संकेतों के बारे में पता हो? इव संकेतों के बारे में जानकारी आपको अस्थमा अटैक से बचाने में मददगार साबित होती है।

**सीने में जलन**  
जब अस्थमा की समस्या बढ़ने वाली होती है तो रोगी को सीने में जलन या कुछ अन्य तरह की समस्या भी हो सकती है। अस्थमा ग्रस्त बच्चों में जब यह समस्या होती तो वो समझ नहीं पाते कि उन्हें क्या हो रहा है। ऐसे में उनके माता-पिता को ज्यादा सरकत रहना चाहिए।  
**होठों और अंगुलियों में नीलापन**  
जब शरीर के प्रयास मात्रा में ऑक्सीजन नहीं मिल पाता है तो होठों और अंगुलियों और होठों पर नीलापन दिखायी देने लगता है। इस स्थिति को केयानोपिसिस कहते हैं। यह स्थिति इशारा करती है कि रोगी को तुरंत चिकित्सक के पास ले जाया जाए।



## सेहत का सतरंगी

### खजाना

आपने बोरिंग खाने में जरा रंग भरिए। गहरे रंग के फलों और सब्जियों, जैसे खुबानी, गाजर और लाल व पीली मिर्च और पालक जैसी हरी पेपर दर सब्जियों, अस्थमा के मरीजों के लिए लाभप्रद बीटा-केरोटीन नाम का एक खास तत्व पाया जाता है। जिस सजींया या फल का रंग जिनाहा गहरा होगा उसमें एंटी-ऑक्सीडेंट्स की मात्रा उतनी अधिक होगी।

### आपके लिए नहीं है

#### विटामिन-ई

यूं तो विटामिन-ई काफी गुणों से भरपूर होता है, लेकिन अस्थमा मरीजों को इससे जरा दूर ही रहना चाहिए। यह खाना पकाने के लगभग सभी तेलों में मौजूद होता है, लेकिन इसका इस्तेमाल जरा सीमित मात्रा में ही करना चाहिए। सुखमारुप बीटा-केरोटीन नाम का एक प्रकार की गोभी, बादाम और अधिक साबुत अनाजों में विटामिन-ई की मात्रा कम होती है। इन आहारों को अपने भोजन में अवश्य शामिल करें।

## विटामिन बी,बना है आपके लिए

ऐसा भोजन जिसमें विटामिन-बी मौजूद हो, अस्थमा के मरीजों का आहम हिस्सा होना चाहिए। हारी पेटेदार सब्जियों और दालों, अस्थमा मरीजों को तनाव के जरिए होने वाले अटैक से बचाने में सहायक होती है। इस बात की साक्ष्य मिले हैं कि विटामिन बी-बी और नियासिन विटामिन बी-बी, निकोटिन और विटामिन पीपी की कमी से भी अस्थमा का खतरा बढ़ जाता है।

### प्याज- खांसी पर वार, गले से प्यार

प्याज





